ट्रेकिया प्रत्यारोपण की तहकीकात होगी

पिछले कुछ वर्षों में स्वीडन के कैरोलिंस्का विश्वविद्यालय के सर्जन पाओलो मेकिएरिनी खबर देते रहे हैं कि उन्होंने कई मरीज़ों में सांस नली (ट्रेकिया) का प्रत्यारोपण सफलतापूर्वक किया है। उनके शोध पत्रों में कुछ विरोधाभासों के चलते मामले की तहकीकात शुरू की गई है।

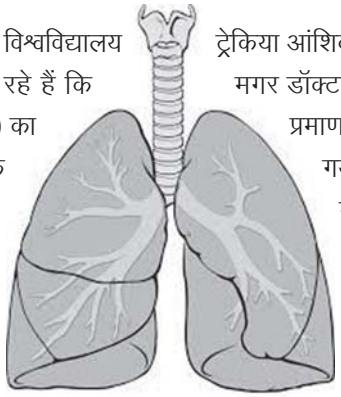

2008 से मेकिएरिनी ने 17 मरीज़ों में ट्रेकिया का प्रत्यारोपण किया है। शुरुआत में तो प्रत्यारोपण के लिए वे मृत देह के ट्रेकिया का उपयोग करते थे मगर आगे चलकर उन्होंने कृत्रिम ट्रेकिया का भी उपयोग किया। अलबत्ता, दोनों मामलों में वे ट्रेकिया को खुद मरीज़ की अस्थि मज्जा से प्राप्त स्टेम कोशिकाओं से उपचारित करते थे। उनके अनुसार ऐसा करने पर प्रत्यारोपित ट्रेकिया एक सजीव ऊतक की तरह काम करता था।

इन खबरों ने अंग प्रत्यारोपण और खास तौर से कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण के क्षेत्र में तहलका मचा दिया। यह एक ऐसा कदम था जिसको लेकर इस क्षेत्र के सभी वैज्ञानिक बहुत उत्साहित थे। मगर फिर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कैरोलिंस्का अस्पताल के चार डॉक्टर्स ने एक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इन डॉक्टरों ने मेकिएरिनी के तीन मरीज़ों के इलाज में मदद की थी। इन डॉक्टरों ने मेकिएरिनी के *लैंसेट* में प्रकाशित शोध पत्र की तुलना अपने वास्तविक अवलोकनों से की और कुछ गड़बड़ियां पाईं।

मसलन, *लैंसेट* के पर्चे में बताया गया था कि कृत्रिम ट्रेकिया आंशिक रूप से स्वस्थ एपीथिलियम से ढंका था मगर डॉक्टरों को मरीज़ों की बायोप्सी में इसके कोई प्रमाण नहीं मिले। इसी प्रकार से पर्चे में बताया गया था कि ट्रेकिया और आसपास के ऊतकों के बीच बढ़िया जुड़ाव बन चुका था मगर वास्तविकता में इन जुड़ावों में कई जगह गैप्स थीं और स्टेन्ट (छल्लों) की मदद से इन्हें स्थिरता दी गई थी। यानी पर्चे और वास्तविकता के बीच अंतर हैं।

डॉक्टरों की रिपोर्ट के बाद कैरोलिंस्का विश्वविद्यालय ने एक जांच समिति का गठन किया है जिसकी रिपोर्ट 15 जनवरी तक आने की उम्मीद है।

डॉक्टरों ने अपनी शिकायत में यह भी कहा है कि जिन मरीज़ों पर ये प्रत्यारोपण किए गए थे उनकी सहमति के कागज़ात भी उपलब्ध नहीं है। इसके आधार पर मेकिएरिनी के खिलाफ नैतिकता समिति भी जांच कर रही है। यानी उन्हें वैज्ञानिक दुराचरण और नैतिकता सम्बंधी उल्लंघन दोनों के लिए कटघरे में खड़ा किया गया है।

स्वयं मेकिएरिनी का कहना है कि उन्होंने कोई हेराफेरी नहीं की है और वे जांच का स्वागत करते हैं। जहां तक सहमति सम्बंधी कागज़ात का सवाल है, तो उनका कहना है कि उन्होंने पूरी जानकारी देकर मरीज़ों की सहमति ली थी। हां, उन्होंने यह ज़रूर स्वीकार किया है कि संपादक की सलाह पर अपने शोध पत्र में उन्होंने कुछ विवरणों में काट-छांट की थी। ***(स्रोत फीचर्स)***